RADHESHYAM

- राधेश्याम जी आप क्या काम करते हैं ?

अभी मैं मीरागढ़ी में Hindustan airon Pvt. ltd. में काम करता हूं tool room में Asst. dyemaker का काम करता हूं। हमारे यहां इस समय कम से कम 125 लोग काम करते हैं। salary 5500 रु. P.F मिलाकर मिलता है। 1997 से काम कर रहा हूं उससे पहले ऐसे ही temporary करते थे। इससे पहले factory किराये पर Palam में चलती थी। 1997 में उद्योग नगर में मालिक ने अपना Plot खरीदा और काम शुरू किया यहां पर Hindustan Aircon Pvt. ltd. के नाम से।

- अच्छा तो वहां पर किस तरह के लोग काम करते हैं और कहां कहां से लोग आए हैं ?

हरेक state से आए हैं यानि UP Bihar, आंध्रा, मध्यप्रदेश यानि हर जगह के हैं। दिल्ली हरियाणा। मतलब हरेक state के हैं।

- उनके grade वगैरह के बारे में बताइये।

ग्रेड में तीन, चार तरह के हैं। एक तो official हो गया दूसरा है मजदूर लोगों का। मजदूर लोगों में तीन ग्रेड है। एक तो कारीगर लोग हैं जो काम जानते हैं। दूसरे तो helper है उनकी salary 2500-2600 के आस पास है।

- वहां पर कोई Union है ?

नहीं, कोई Union है।

- अच्छा 1987 में दिल्ली में हड़ताल हुई थी तब क्या आपकी factory में भी हड़ताल हुई थी।

नहीं उस समय मैं दूसरी जगह पर काम करता था। मानसरोवर गार्डन में वो छोटी जगह थी 2-3 मशीन थी। छोटी जगह थी। लेथ का काम करता था मैं tool room में। Intech India के नाम से कंपनी थी। साबुन बनाने वाली मशीन बनाते थे। तो 1987 में मैं वहां काम करता था। बहुत अच्छे आदमी थे वे हरेक

के साथ मिला कर चलते थे। नया-नया काम शुरू किया था उसने
पर ज्यादा दिन अच्छा काम चल नहीं पाया उनका।
तो 1982 में मैं वहीं काम करता था। उनकी फैक्ट्री बिल्कुल
बंद हो गई। फिर हमें भी काम छोड़ना पड़ा।

— अच्छा, आज जो आप काम कर रहे हैं उसके पहले और कहाँ-कहाँ
काम किया उसके बारे में कुछ बताएं ?

वैसे तो मैं सबसे पहले 1981 में
यहाँ आया था। अपने आपसे अकेले नहीं आया था। (पूछता है)
पहले की जीवनी बताऊँ क्या ?) हमारे घर में दयनीय हालत थी
हमारे पिताजी छोटे किसान थे ज्यादा जमीन नहीं थी। बस एक
छोटी दुकान थी जिस पर हम बच्चे ~~बच्चे~~ भी मदद किया करते हैं
थे। और उसके अलावे हम पढ़ाई करते थे। स्कूल में कभी-कभी
हम फीस भी नहीं भर पाते थे। पर हमारे अच्छे आचरण के
कारण काफी सहयोग मिलता था। कभी-कभी वे हमारी
फीस माफ कर देते थे। इस प्रकार बहुत मुश्किल से हमने मैट्रिक
किया, बोर्ड की परीक्षा में बैठने लायक भी हमारी हालत नहीं थी पर हमारे
अध्यापक ने हमें बहुत मदद की और परीक्षा में सम्मिलित करा।
उसके बाद हमारे पिताजी से बड़े पिताजी हैं वो टेलीफोन Exchange
में गोरखपुर में Asst. Engineer थे। पर परिवार तो बँट चुका था
उनके दो लड़के थे दिनेश मोहन यादव और किशनमोहन यादव।
उनके जो बड़े लड़के थे उन्होंने MA करके दिल्ली में नहीं ~~प्रा~~
~~प्रा~~ प्राइवेट कंपनी में ~~नौकरी~~ supervisory कर रहे थे और साथ में सरकारी
नौकरी की भी तलाश कर रहे थे। उन्होंने हमारी स्थिति
देखकर हमारी बहुत मदद की। बहुत मानते थे मुझे। तो जैसे
ही बोर्ड की परीक्षा खतम हुई, 1981 में मैं ट्रेन पकड़ के
दिल्ली चला आया। मैंने नहीं देखा कि मैं पास हुआ कि नहीं
बाद में पता चला कि मैं second division से पास हो गया है
तो मैं मेरा कोई काम तो आया ~~न~~ नहीं क्योंकि कोई डिप्लोमा
तो मेरे पास था नहीं। उन्होंने फिर किसी दोस्त से बोलकर
लेथ मशीन का काम लगा दिया रायवाला में। Helper में
नहीं लगाया सीधे मशीन पर लगा दिया। कहा काम

सीख जाएगा। पैसे कम मिलेंगे पर कोई बात नहीं। तो वहाँ पर मैंने कोई 1-1½ महीना काम किया होगा। कोई पैसा भी नहीं मिला। और, घर, की हालत तो वैसे ही खराब थी। अब यहाँ भी, रहेगा तो खाने के लिए पैसा तो चाहिए ही पर वे थे तो उन्होंने help किया। जगह तो कुछ खास नहीं थी सीखने के लिए एक सवा महीने मैंने काम किया पर बहुत अच्छा नहीं था। धीरे-धीरे हमारी भी दोस्ती होने लगी उनके दोस्तों से ही। उन्होंने भी लोगों से कहना शुरू किया कि हमारा भाई है, कोई काम बताओ इसके लायक लोग बताते थे। तो सवा डेढ़ महीने के अंदर मैंने वहाँ से काम छोड़ दिया। मुझे महीने को 70 रुपये मिला था सन 1981 में। मैं, फूल नहीं वई की महीने में 22 तारीख को परीक्षा खत्म होने के बाद आया था। तो 70 रु. मुझे मिले। उससे पहले मैंने पटेल नगर में वहाँ भी दो मशीन थी पर बात कर लिया था। वहाँ मैं 150 रुपये में लगा। वहाँ तीन-चार महीने किया उस समय महंगाई कम थी तो 80-100 रु. में खर्च चल जाता था। तो मैं उसमें से घर के लिए पैसे बचाने लगा। अभी भी मेरे अंदर कोई बुरी बात नहीं है जैसे नशा वगैरह

माँ बाप के अलावा मेरी फैमिली में चार भाई है मुझे मिलाकर। मैं यहाँ आ गया था बाकी तीन वहीं थे। मेरे से छोटा वाला पढ़ाई कर नहीं सका। छोटी से ही वह इधर उधर काम में लग गया। गाँव में ही रोजी-रोटी के लिए, अपना पेट-पालने के लिए कुछ करता रहा। उससे छोटा वाला middle स्कूल तक किसी तरह पढ़ा। उसके बाद सबसे छोटा वाला को मैंने पढ़ाना शुरू किया। मैं भी तीन-चार-चार महीने काम करता रहा। लोग जहाँ-जहाँ बताते मैं वहाँ जाता। कभी तीमारपुर भी गया। उसके बाद मोतीनगर गया। वहाँ तकरीबन एक साल काम किया। उस एक साल के अंदर वे जो बड़े चाचा के लड़के थे वे छोड़कर चले गये। उनकी सरकारी नौकरी लग गई। देवरिया district में हमलोग वहीं के रहने

गोरखपुर
वाले हैं देवरिया में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक में कैशियर के post
पर लगा। तब हम यहाँ रहने लगे ये जगह उनहीं की बनाई
हुई है। धीरे-धीरे हमें भी जानकारी होने लगी थी। वहाँ
से हम मोतीनगर में काम करने लगे थे उसके बाद आनंद पर्वत में
काम किया वहाँ 50 रुपया ज्यादा मिला। हम घुम घुम कर
लोगों को बताते थे कि ये काम करते हैं वे भी ट्राई करते थे
तीन-चार घंटे ट्राई लेते थे उसके बाद पैसे की बात करते
थे। उस समय जब हम आये थे तो 240 रु. ग्रेड
था helper का फैक्ट्री में ~~Private~~ factory का पर काम
के हिसाब से हमें 300 रुपया मिला। तो हमारे मामा के
गाँव के थे पार्टीदारी में मामा ही लगते थे तो वे ओखला में
उस समय सन 83 के आसपास वे ओखला में फोरमैन थे।
मोटर स्टैंड पिन वो जो मोटर चलता है उसके अंदर
स्टैंड पिन होता है उसकी डाई बनती थी। तब सन उसमें
भी होता है तो वहाँ मुझे काम सिखाने के लिए ले गया &
मेरी हालत को देखकर कि लड़का काम करने वाला है
उसकी स्थिति ऐसी है तो वहाँ पर हमने दो साल
मतलब उनके साथ काम किया दो साल तब जानकारी
हो गई इस लाइन की मगर वो फैक्ट्री ठीक नहीं चली
वहाँ के 25-26 लोग होंगे मालिक दबाते वगैरह की बात
करने लगा तो लोग Union बना दिये उसका सहायता लिये
जब यूनियन वाला आया तो पैसा लेने लगा वो हमलोगों
को भी सलाह देता और मालिक लोग को भी सलाह देता
उनके फायदे को ज्यादा हो गया और उन्होंने धीरे-धीरे
काम डाउन दिखाना शुरू कर दिया बोलने लगे हमारे पास
काम है ही नहीं तो कहाँ से देंगे। लोग भी तरह तरह की
माँग करने लगे। बोनस चाहिए, PF चाहिए ESI जो कर्मचारी
को बीमा निगम का मिलता है, जिससे दवा वगैरह करते हैं
उसने दिया तो पर धीरे-धीरे, काम ही बंद कर दिया। बंद
कर दिया तो यूनियन वालों को चढ़ा दिया उन लोगों ने कहा

काम चलेगा नहीं तो क्या करोगे अपना हिसाब ले लो।
तब मैं 84 में अपना हिसाब लेकर चला आया उसी
समय इंदिरा गाँधी का कांड हुआ था। 84 में तब हम
वहीं काम करते थे। रास्ते में बिल्कुल तूफान मचा हुआ था
बहुत मुश्किल से हम लोग निकल कर आये थे हर गली
में मार काट शुरू हो गया था। जब मैं मैट्रिक करके आया
था तब मेरी उम्र 16 वर्ष के करीब थी दसवीं कक्षा पास
किया था। अब तो काम छूट गया था तो घूमना पड़ता था
हर area में शक्तिनगर, मोतीनगर, कर्मपुरा कहीं
wanted निकला हुआ है चॉक से लिखा रहता था खराद
मशीन पर काम करने वाला चाहिए enquiry कीजिए
कभी काम देते थे या अच्छी जगह नहीं होती थी तो ट्राई
करने के बाद छोड़ देते थे। काफी संघर्ष करना पड़ा।
तब वहां मानसरोवर गार्डन में जाकर लगा। वो बहुत
अच्छे आदमी थे। वहां 500 रुपये में काम किया था
आखिर में यहां पर आकर, 900 रु. में लगा काफी खुशी
हुई। घर का खर्च चलाने लगा घर भी धीरे-धीरे
बढ़ाने लगा। चार भाइयों में दो जो हमसे बड़े थे तो हमारे
पिताजी पहले रोडवेज में काम करते थे जब हम पैदा नहीं
हुए थे तो दिमागी परेशानी से वे रिजाइन कर दिये थे
तो 1200 - 1300 रुपये मिलते होंगे और रिजाइन
के बाद कुछ मिला होगा, तो उससे हमारी बड़ी सिस्टर
की शादी कर दी उन्होंने उसके बाद घर की हालत
खराब हो गई थी नहीं चल पा रही थी मैं उसमें से
पैसे भेजा करता था घर के खर्च के लिए माँ बाप के
खर्च के लिए उसमें से भी कुछ बचाने लगा धीरे-धीरे
करके तो 87 के पास अपनी शादी की इकट्ठे करने
अपने बलबूते पर मतलब हमारे बड़े पिताजी ने
बहुत मदद की पैसे पूरे नहीं हो पा रहे थे पर
लेने देने में सबकुछ में काफी मदद की उन्होंने उधार
भी दिला दिया कहा कि अभी ले लो एक दो साल में बेशक

जमा करा देता मैं अपनी शादी किया तब 87 में।
काम तो छूट गया था फिर से तो घूमने लगा। घूमने लगा
तो इस बार यहीं रामा रोड पर 63 नं. है, जो हमारे
मालिक, मानसरोवर गार्डन वाले, उन्हीं से संपर्क किया
था तो बोले कोई और काम देखो कब तक बैठे रहोगे
कोई काम देख लो। तो यहाँ आकर ट्राई किया वहाँ
900 मिलते थे यहाँ 700 रुपये पे लगा। समझ रहा
था कि खाली बैठ नहीं सकते थे। खाने खिलाने वाला
देने वाला कोई था नहीं तो वहाँ लग गया 700 पर।
शादी कर के आया था कुछ कर्ज भी हो गया था तो
सोचा कम से कम खर्चा तो निकले। तो लग गया।
उस समय में जब दो साल बीत गया था 83 में तब
जो अपना छोटा वाला भाई था उसको भी यहाँ लाया
सोचा कारीगर वगैरह में डाल देंगे सीखता रहेगा।
कुछ तो सीखेगा। पैसे तो नहीं मिलेंगे तो उसको भी
डाल दिया कभी यहाँ तो वहाँ जगह तो अच्छी मिलती
नहीं थी। पैसे के लालच में आदमी इधर उधर घूमता
रहता था। जहाँ ज्यादा मिल जाए तो 300-400
से ज्यादा मिलता नहीं था पर उसका खर्चा चल जाता
था। एक यहाँ लगा, तो उनका हिसाब किताब ठीक नहीं
था। मिलने जुलने नहीं देते थे किसी से। वो feeling
बहुत ही अच्छी नहीं लगता था कोई मिलने जाता
तो मिलने नहीं देते थे इनका रवैया ठीक नहीं था।
स्टाफ वगैरह का भी ठीक नहीं था मैंने वो छोड़ ही
दिया कुछ बात। कहीं हो गई तो छोड़ दिया। फिर उसी
Side में एक और फैक्ट्री थी सुरमा बनाती थी
जो लिटर में डाला जाता है उसमें लगा। तो कहीं
पर भी काम होता है तो उसके साथ हेल्पर वगैरह होते हैं
साथ में सहयोग करने के लिए। तो उसमें एक सरदार
था foreman, था, तो ऐसा हुआ कि मार्केट वगैरह जाती
थी तो वो लोहे वगैरह उठाता था सोला मिल था

हैवी था अब तो ढकेलना पड़ता था। मैंने मना कर दिया कहा मशीन पर जो मर्जी हो करा लो आगे के लिए हैल्पर होते हैं उनसे कराओ तो वहाँ से भी हिसाब हो गया। कहा - ऐसा आदमी नहीं चाहिए। मैं फिर से घुमने लगा। तब घुमते-घुमते दसई दारापुर में जगह मिल गई मतलब पेपर में देखा था vacancy निकली थी कि लेथ मशीन पर एक बंदा चाहिए। तो वहाँ गया था वहाँ पर भी हजार के पास लगा होगा। उस समय यही ग्रेड चल रहा था। 1200-1300 रु. का पर वो देते नहीं थे कहते थे ये काम नहीं आता वो काम नहीं आता। डिप्लोमा वगैरह तो था नहीं कि आदमी कह दे कोई बात, मैट्रिक पास किया था उसमें भी शिक्षा के मामले में ज्यादा जानकारी थी नहीं। तो वहाँ पर लग गया। Dye की इंडस्ट्री थी, ऑटो पार्टस बनते थे, क्लच वगैरह। पहली बार प्रोडक्शन लाइन में गया था। एक चीज बना रहे हैं तो दिन भर बना रहे हैं बहुत तेजी से बनता था। पहले कभी नहीं किया था मगर फिर भी किया। लग गया तो मेहनत किया। फिर वहाँ भी ऐसी परिस्थिति आ गई कि उन्होंने भी कह दिया। जबकि घर की परिस्थिति देखते हुए मैं छोड़ना नहीं चाहता था। कहीं से काम कि अगर जब तक सही setting नहीं हो तो दूसरे जगह न जाऊँ, मगर इन्होंने ही कह दिया कि भाई कहीं और जगह काम देख लो अपना दो-चार लोग ठहरे और सभी लोग निकल गये। कहा कि अब जब बोल ही दिया है तो छोड़ना ही पड़ेगा, बैठा कर तो पैसा देगा नहीं। और फिर से घुमने लगा। फिर पेपर में देखा कभी जगह नहीं थी। जब जगह थी तो अच्छी नहीं थी। ITI वगैरह की माँग करते थे तो वहाँ विफल हो जाता था, ITI थी नहीं। अच्छी फर्मों भी थी तो ITI वगैरह की माँग होती ही और थी नहीं। तो फिर मैं एक दिन want देखा तो लिखा हुआ था मायापुरी में हरिसिंह इंजीनियरिंग वर्कस था। तो उनके यहाँ गया

सरदार जी की फैक्ट्री थी। दो घंटे का trial लिया। बेरिंग बनाने का काम दिया था लेथ मशीन पर तो मैं किया, दो घंटा दस मिनट लग गया। उन्होंने दो घंटे का टाइम दिया था। काम से खुश हुए। उन्होंने मेरी salary 1100 रु. किया बोले तुम्हें यहाँ काम नहीं करना है, नारायणा में करना होगा। Chemic नाम की इंडस्ट्री थी, Pvt. Ltd. थी। उसमें पाँच छः भाग थे तो वो Hydraulic press बनाते थे तो ये प्रेशर से चलती थी। ऑयल प्रेशर से वहीं लेथ मशीन था shaper और welding वगैरह का काम होता था तो मैं वहीं पर लगा। वहाँ मुश्किल से 8-9 महीने काम किया था मुश्किल से 1100 रु. मिलता था। बस experience था 10% PF कटता था। 8-9 महीने किये तो overtime नहीं चलता था। overtime के बगैर तो खर्चा चल ही नहीं पाता था। मेरी एक और आदत थी कि जिस वर्कशॉप में लगते थे वहाँ के बारे में सारी जानकारी ले लेते थे। जैसे शौक से कर लेते थे। जैसे आदमी खराब से करता है तो वह आदमी खराब से ही काम करने लगता है। मगर मैं ऐसा नहीं करता मैं अच्छा से काम करता हूँ ताकि मालिक मेरा पैसा थोड़ा और बढ़ा दे। हिसाब से मेरा व्यवहार मालिक से अच्छा ही रहता था और ईमानदारी के लिए मैं काम करता था। 10 रु. मान लीजिए किसी का अगर गिर गया तो उठा कर दे दिया, ताकि ईमानदारी के लिए। और जो कोई जरूरी चीज हो तो उसे माँगा भी जा सकता है। तो इसी तरह से तो वहाँ पर मक्कड़ साहब थे वो शायद आर्मी में रह चुके थे अब रिटायर हो चुके थे। किसी मारफत लग गये होंगे। वो इंचार्ज थे स्टोर के। काफी मजाकिया टाइप के थे, हमलोग काफी घुल मिल गये थे उनसे। मुझे बहुत मानते थे वे। हमलोगों से पहले वहाँ एक इंजीनियर था। इंजीनियरिंग किया हुआ था अभी वो छोड़ चुका था। वहाँ पे उसकी नौकरी वजीरपुर में थी। एक बोरिंग मशीन

बनाते थे उनके यहाँ लग गई थी तो गये थे तो वहाँ पे जो आदमी लड़के माँगे, कि भाई मुझे पेंटर वगैरह चाहिए तो जहाँ मशीन बनती थी पेंटर वगैरह भी होते थे बिल्डर सेंटर। तो उन्होंने कहा कि ठीक है ले जाओ तो हम भी वहीं खड़े थे। तो हमने मकर साहब से कहा कि मकर साहब हमारे लिए भी कोई जगह हो तो भिजवा दो। तो उन्होंने उससे बात की कि भाई लेथ मशीन पर काम करता है लड़का सही है, ईमानदार है, मेहनत भी करता है जरा देखना इनके लिए तो बोला ठीक है - होगी जगह तो बताऊँगा। तो इत्तेफाक से जगह मिल गई और उन्होंने मुझे वहाँ बुला लिया। वहाँ मैंने trial दिया तो था बहुत तीस - पैंतीस सौ ~~लोग~~ लोग था लेकिन जो पुराना मजदूर था मानो जो मजदूर तो उनको कुछ जलन होती थी। वो लोगों को कुछ करने नहीं देते थे लेकिन मैं भी बहुत अड़ियल ~~किस्म~~ किस्म का आदमी था चाहे कितना भी कोई कुछ कहे मैं बातें सुनकर भी काम लग गया मतलब इस तरह का लग गया कि मतलब मुझे बहुत तंग किया लोग लेकिन बाद उनको खुद पछतावा होने लगा। मेरे आचरण को देखकर वो खुद पिघल गये और मैं वहाँ सीख गया। यहाँ तक नौबत आ गया कि मैं उन्हीं का हिस्सा हो गया। union हरिप्रसाद लीडरशिप करता था वो अलीगढ़ का लड़का था, मुसलमान था वो बहुत शरारती आदमी था तो सबको तंग करता था लेकिन जो पुराने worker थे वे चाहते नहीं थे नये worker वो लोग मैं नये पेंटर ले गये फिर हमको ~~लेकर~~ ले गये तो हमारे वाजिद और यहीं पर जलकर था उसको भी ले गये। पेंटर मे मतलब हमारा काम देखकर मालिक खुश हो गये और काम करने लगा फिर factory वहाँ से मतलब union के चक्कर में बंद करके सबको हिसाब कर दिया। हिसाब करके और मैं फैक्ट्री में गये नारायणा ब्रिज के आगे मुण्डका है। मुण्डका मे उन्होंने किराये

पे लेकर department को अलग-अलग कर दिया जैसे assembly department हुआ welder department हुआ, Highbold depar हुआ वो अलग-अलग करके अलग कर दिया ~~जैसे assembling department हुआ~~ मतलब किसी को ठेकेदारी दे दिया हालांकि एक में हमलोग की ठिकेदारी चलती नहीं क्योंकि मशीन-वशीन का काम चलता था बाडिंग बनाते थे और assembling अलग ले जाके करती थी दूसरी जगह वहाँ एक-एक चीज को बंदी होता था वहाँ फिट हो जाता था। वहाँ पे मालिक और मैनेजर से तो मेरे ताल्लुकात अच्छे थे लेकिन वहीं जो पे यहाँ से इंजीनियर गये पता नहीं उनके मन क्या हुआ कि हमारे प्रति इनकी कोई पे नहीं हुई साल छह महीने के बाद मतलब दो-तीन साल service किया होगा उसके मन पता नहीं क्या घृणा हो गयी। एक दो बंदे हमारे बाद में मिल गये मैं उस department का senior था। और काम और सारी जानकारी तो पता नहीं क्यूं बात-बात पर लड़ाई करने के मूड में आ जाता था। उनको मगर घूमते थे उनको भी अपने department में काम में लगा दिया। उन सबको मानता था लेकिन पता नहीं हमको उसको क्या दुश्मनी थी हमसे वो चिढ़ा रहता था। उसके मन-में क्या क्या चलती थी वो थोड़ा चालू पुर्जा भी था और दो नंबरी काम भी करता था लेकिन हमको कोई मतलब नहीं था कि क्या करता था क्या नहीं करता था शायद ईमानदारी की वजह से। शायद उसको लगता था ~~कोई~~ मैं मेरी कहीं शिकायत न कर दे। पर मेरे मन में ऐसी कोई भावना न थी। लेकिन मैंने किसी की भी शिकायत नहीं की। या लड़ाई झगड़ा भी होता था तो मन में ही रखते थे शिकायत नहीं करते थे। और लड़ाई करने वालों को ~~~~ सम्मान भी थे। हमारी यही धारणा है पर बार-बार उसके मन में tension की ही भावना रहती थी। एक बार उससे तो हाथापाई भी हो गई थी जो हमारे मालिक थे वे यहीं रहते थे पंजाबी बाग में। तो उनके पास कभी ~~~~ वो जाए तो कभी मैं जाऊं। जब झगड़ा हुआ तो सारा काम बंद सा हो गया तो लड़कों ने

आकर हमें छुड़ाया तो ~~आरे~~ फिर वो हमसे बोले नहीं —11—
वो भी चल गये और हम भी चले गये। तो फिर दूसरे दिन वहाँ गये तो वहाँ के लड़कों ने बताया कि उसकी कोई गलती नहीं है। तो मैं तो दूसरे दिन गया नहीं मैंने छोड़ दिया था तो उन्होंने एक लड़का भेजकर बुलवाया और कहा कि वो यहाँ काम करेगा। तो काम करने लगा तो फिर जो एक साल की increment, तरक्की होती है तो साल-साल की होती है तो जो भी जो भी जैसा करता है 100-150 मालिक के ऊपर हमलोग छोड़ देते है या 10% या 5% है फैले एकदम तो वे करते लगा। तो जब उसका समय आया तो वो तरक्की नहीं करने देता। तो वहाँ Main जो था, जहाँ एसेम्बालिंग होता था वहाँ मैनेजर रहता था तो मैं जाकर उससे मिला उससे जाकर कहा कि मैं मेहनत करता हूँ तो तरक्की तो होनी ही थी, तो उसने मतलब 100 Rs मेरी तरक्की कर दी। तो उसे ये बात खलने लगी कि इसने यहाँ कहके तरक्की करा ली हम करना नहीं चाहते थे। तो उसके मन में ये बात खल गयी। अब जो यहाँ से चला तो वो बोला कि किसी से कहना मत की मेरे 100 Rs की तरक्की हो गयी। ~~हम~~ अब हम किसी और की अभी नहीं चाहते हैं लेकिन इस तरह का काम मैंने कहा कि नहीं जानते को सो ये बात जान ही गया था वो आदमी लेकिन उस time मैंने कहा नहीं। तबतक ये आ गया। उस समय लंच का समय था, तबतक वहाँ जाते ही उसने मुझसे बात की, उनको कुछ कहा होगा और Phone कर दिया मैनेजर के पास और कहा कि ये भड़का रहा है सबको कह रहा है कि मैंने तरक्की ले लिया है। यह सुनकर खराब लगा मैनेजर को। उसने मुझे बुला लिया अपने पास और कहा कि मैं तो तुमको बहुत अच्छा आदमी समझता था। ऐसे कहा तो मेरे को भी बहुत तकलीफ हुआ मैंने तो अच्छा ही किया ~~आजतक~~। उसने कहा कि अब हिसाब ले लो, तो हमारे मन में भी बुरा लगा मैंने भी Direct बोल दिया कि मैंने तो कुछ किया नहीं आपका विश्वास अगर टूट गया तो हम भी Resign दे देते हैं। वह बोला कि तब ~~a~~ लिखकर दो कि हम Resign कर रहे हैं मैंने लिखकर दे दिया कि खुशी से छोड़कर जा रहा हूँ नौकरी। जब लिख दिया तो मैनेजर बोला कि चलो अब ठीक है काम कर लो आगे से ऐसा नहीं होगा। मैंने कहा कि ~~अब~~ अब लिख दिया है तो आगे काम नहीं करूँगा इसके Charge में तो बिल्कुल ही काम नहीं करूँगा। बोले की भाई देख लो हमने कहा कि नहीं करना है तो उस समय ~~२७~~ घर-१८ से आया गया था, शादी भी कर रखी थी पैसे भी है—

रखे थे, कुछ एडवांस ले रखा था तो वह कट गया। पैसे बाकी थे इसलिए सैलरी भी नहीं लिया था। अब पैसे भी नहीं रहे। अब जब हिसाब लिया तो एडवांस कट गया पैसा ही नहीं रहा।

तब अभी जो भाई था वह यहाँ था। आठवीं कर रखा। उसको बुला रखा था कि कहीं काम पर लगा देंगे पर अचानक से उसका तबीयत खराब हो गया मतलब Ches में कुछ परेशानी हो गयी थी। नर्सिंग होम दरियागंज में इलाज करवा रहा था। हमको दवाई लाना था पर उस समय पैसे ही नहीं थे। हमने कहा कि भाई की तबीयत खराब है, आपने तो पैसे ही कट लिये मुझे दवाई खरीदनी है। तब उसने मुझे 250-300 रु दिलवा दिये। बाहर आया तो चाय वाला था जहाँ पर चाय पीते थे और महीने पूर पैसा देते थे। अब बाहर आया तो जब काम छोड़कर जा रहा था तो चायवाले को बोला कि भाई अपना हिसाब ले लो। जब पैसे दे रहा था, उतने में मैनेजर आ गया गाड़ी से। उसने चाय वाले को पैसा देते देखा तो बोला तू तो बोल रहा था भाई की तबीयत खराब है पैसे चाहिए। भाई इसने चाय पिया है अभी जा रहा है तो देना ही होगा। कल को बोलेगा चाय पीके भाग गया, गाली देगा। तो कहा कि अब क्या करोगे? मैंने कहा पहले इसको देलूं फिर जो बचेगा। अलग से इंतजाम करेंगे। ऐसा है ये तीन दिन के बाद आके काम करना हमने कहा मैं इसके अंडर काम नहीं करूँगा। आप कहो तो आपके अंडर कर सकता हूँ। उसने कहा काम तो वहीं करना होगा टूल रूम तो वहीं है तुम्हारे लिए जगह खाली है। हम भी जिद पर अड़ गये थे तो काम छोड़ ही दिया और ~~घू~~ घुमने लगे। स्थिति ठीक तो नहीं थी पर 10-5 दिन भी बैठ जाने पे सोचना पड़ता था आगे महीने का खर्च कैसे चलेगा। कां Want देखने लगा यही होता था कि फाटक पर लिख दिया खरादी चाहिए या कुछ और चाहिए। उस समय मुझे भी Shaper वगैरह का काम आने लगा था। लेकिन leth plate के मशीन पर काम नहीं था नहीं त्रीनगर में। एक जान पहचान के मामा हैं प्लास्टिक लाइन में काम करते हैं वो प्लास्टिक लाइन की Dye बनाते हैं। मशीन में जो छोटे-छोटे सामान ~~बनते हैं~~ होते हैं उनकी Dye बनती थी उन्होंने कहा कि एक जगह खाली है, वहाँ तुम्हें भेज देते हैं। वहाँ गया, ~~ट्रांयल~~ ट्रायल लिया मेरी मशीन पर Dye बनाने दिया तो मेरा काम उनके पसंद आया। तो जब मैंने काम छोड़ा था तब मेरी तनख्वाह वहाँ पर 2400 हो गयी थी मतलब पैसे के पीछे मैं..... तब उस समय जब Grade 1900 का था तब मेरे काम के हिसाब से 2400 मिलता था। मैं वहाँ Foreman के था। पूरा देखभाल करता था 2400-2500 हिसाब से रहने लगा था। जबकि बाकी लोगों की तनख्वाह 1800-1900 रु तनख्वाह थी। यहाँ भी मैंने कहा कि मैं तो 2600 में काम करता था,

यहाँ मामाजी बोले हैं तभी आया हूँ। अब कुछ तो बोलना ही पड़ता है कि किसी तरह लग जाये आदमी पैसे भी थोड़ा ज्यादा मिल जायें। उन्होंने कहा कि इतना तो नहीं दे सकता भाई जबकि मन में तो था कि काम करना है कुछ भी मिल जाये उन्होंने कहा कि 2400 रु दे सकता हूँ आगे बढ़ा दूँगा मेहनत करोगे तो। उसके दो लड़के थे और दो आदमी रखा था। सरदार खुद ही मैनेजर था और मशीन पर Dye भी बनाता था बुढ़ा था उसके दोनों लड़के भी काम करते थे और साथ में हमलोग। वहाँ भी मुश्किल से मैं एक साल काम किया होगा। बाद में उसके व्यवहार का पता चला। बहुत सख्ती से काम लेता था कोई मिलने आये तो नहीं देता, फोन आये या Letter आये तो नहीं देना चाहता था। कोई अगर तबीयत खराब हो गया या छुट्टी चाहे तो बुलाकर बोलता था। अब काम करना था तो मन मारकर कर रहा था, काम तो करना ही था कोई उपाय था नहीं। बीच-बीच और try करता था कि कहीं और काम मिल जाये और दिल्ली तो वैसे ही था प्राइवेट फैक्ट्री थी। काम नहीं मिलता था। सरकारी में तो कोई Chance नहीं था नाहीं देखा था ज्यादा, ना ही कोई मार्गदर्शन करनेवाला सबको पता ही है आजकल पैसे से ही सबकुछ चलता है तो एक दिन अचानक उसके लड़के मुझे कुछ-कुछ बोलते थे मैं भी डरता था नहीं तो पलटकर जवाब दे दिया। तो वे अपने पापा से बोल दिये। एजेड थे वे लड़के भी हमसे। तब उसने बुलाकर हमसे बोला कि भाई तुम्हारी तो बनती नहीं इनसे। मैंने कहा कि बनती नहीं तो इसमें मेरा क्या कसूर हम काम करते हैं मशीन पर ऐरा-गैरा काम तो होगा नहीं। उसने कहा कि ~~कब~~ ऐसा है तुम अपना हिसाब ले लो। मैंने कहा कि मैनेजर जी दे दो, पर इस महीने काम करने दो क्योंकि महीने के शुरू में ही बोल दिया, जैसे कि जनवरी है तो महीने के साथ 10 तारीख को प्राइवेट में सैलरी मिलती है तो मैंने कहा कि अगले महीने तक काम करने दो। जबकि उसूलन यही होता कि जब कोई छोड़ता है ~~कि~~ तो बोल देता है कि मैं 15 दिन में छोड़ दूँगा या फिर जब मालिक निकालता है तो बोल देता है कि अगले 15 दिन में अपना हिसाब ले लेना। ~~मर~~ मगर वो कुछ नहीं बोला एकदम से बोल दिया। तो हमने उससे 15 दिन का समय माँगा, पर वह नहीं दिया। हमने ~~कहा~~ कहा कि भाई नहीं दोगे तो सैलरी दे दो। इस तरह यहाँ भी काम छूट गया और हम घूमने लगे।

पेपर सूपर निकलता था उसमें देखता था कि कहीं Vacancy है या नहीं गलियों में भी देखता घूमते-घूमते आनंद पर्वत ~~पर~~ पहुँचा तो

वहां जो मुण्डका में सर्विस कर रहा था वहां का काम उस गली में एक international नाम की Company वही काम करता था। मेरी कोई जान पहचान नहीं थी। मैं वैसे ही पहुंच गया था तो एक बूढ़ा मिला जो ऐसे ही काम करता था। मैं देखा तो बोला यार कि मेरे को काम में लगा दो ऐसे ही घूम रहा हूं। साथ में काम किया था तो। वो बोला ठीक है, वहां एक लेथ मशीन पर काम था। वो जो लेथ मशीन था बहुत हेवी थी। उसका कम से कम 3 फुट का दायरे में चक्र होगा। उसपर Job बनाते थे। उसपर बनाते थे जो road roller देख रहे हैं ना आप उसी का पहिया बनता था। उसके ऊपर बोर लगाता था या कट लगता था। उसपर सीट डालकर उसका कट लगाते थे। वहां पर दो लेथ मशीन थी। एक छोटी और एक बड़ी, उन्हीं पर काम होता था। पांच छः लोग यहां भी काम करते थे। यहां पर फिर वही पैसे की बात। मैंने कहा कि वो 2400 देते थे आप 2800 दो। 1-2 सौ बढ़ाकर ही बोलता था। सोचकर कि कम करके 2400 पर आ ही जाऐंगे। कम तो करेंगे ही पूरे पैसे तो देंगे नहीं उन्होंने कहा बहुत मांग रहे हो इतने तो हम दे नहीं पाऐंगे। हमने कहा इतना कड़ा काम करा रहे हैं तो मतलब क्रेन से चेनकुप्पी से piece टांगते थे। तब आदमी

काम करता था। फिर बहुत करके 2450 रु. पर fine हुआ।
50 रु. की बढ़ोतरी हुई। Heavy काम देखकर तो
घबरा गया पैसे भी ज्यादा थे नहीं उसी समय में हमारा
गौना हुआ था। शादी के 6-7 साल बाद गौना
second marriage को बोलते हैं तब वहीं गाँव में।
पैसे ज्यादा थे नहीं घर की स्थिति ठीक थी नहीं
फिर भी अपनी शादी के दो साल बाद छोटी sister
की शादी की एक दो साल में जो कर्ज लिया था उसको
भरा। फिर अपने ही खर्च पर पाँच साल बाद उसका
गौना किया अपने साथ ही किया 93वे में अपने बूते
पर। माँ बाप के पास कोई पैसा था नहीं। उस समय
एक भाई भी साथ में रहता था। मैं वहां था तो उसे भी
वहां ले आया। बोला खाली है कोई काम करो
घर का खर्च तो चलाना ही है उसी दौर में ढूँढता
रहता था लेकिन जो हमारे मामाजी थे वे भी आते
जाते रहते थे। उसको एक दिन अचानक से helper
man की जरूरत पड़ी। ज्यादा जानकारी थी नहीं
वहाँ पर भी लेथ मशीन थी। दो डाई मेकर रख रखा
था बाकी काम बाहर से करवाते थे तो वो आए
एक दिन अचानक इनका इधर लड़ाई झगड़ा से
मेरा दिल टूट चुका था किसी पर विश्वास नहीं करता
था। सोचता था कोई कैसा व्यवहार करे। तो,
वो एक दिन आए किसी से पूछताछ करते हुए बोले

कि कोई खाली है क्या । तो गाँव के ही एक भाई लगते हैं वो बोले कि राधेश्याम को तो जानकारी है पूछ लो उसरते वो हमारे पास आ गये तो मार्च में ही 1995 में ही वो बोले हमारे पास काम करने चलो नहीं पहले वो बोले कि कोई काम करने वाला लड़का हो तो हमें दे दो । मैंने पूछा क्या काम है तो बोले - Shaper पर काम करने वाला चाहिए । मैंने कहा कि वैसे तो कोई नहीं है पर हमारे को काम की जानकारी है लेकिन हम जाएँगे नहीं । वे आए थे हमारे ही पास लेकिन हमें नहीं मालूम लेकिन जब हम ऐसा बोले कि क्यूँ अच्छा नौकरी मिलेगा तो नहीं जाओगे । बोले कि नहीं ऐसे ही हमारा दिल टूटा हुआ है हम किसी अपने आदमी के साथ काम नहीं करेंगे । वैसे भी मैं आनंदपर्वत में काम कर रहा हूँ बोले नहीं चलो हमारे साथ वहाँ पर अच्छी जगह है वो बोनस देता है मतलब ओवर टाइम देता है । एक यही सुविधा था ~~मतलब~~ मतलब बाकी कुछ भी सुविधा नहीं थी । अब की नई थी बाकी दीवाली और होली में बोनस मिलता था । AC का काम छः महीने चलता है और बाकी में बंद रहता है जबकि जो हमारा tool room का काम था तो जैसे छः महीने चलेगा तो Repairing चलता रहेगा । tool room में और नहीं तो जैसे क्या sample

बनेगा तो उसका ~~dye~~ dye बनाऐंगे। हम और हमलोग तो लगातार करते रहे थे। वे बोले-हमारे यहाँ चलो। मैं बोला - नौकरी छोड़करके नही जाऊंगा। बोले - सुबह आऊँगा। बात करके पीछे पड़ गये। बोले - मत करो, कल छुट्टी है --- तो ये Area सोमवार को बंद रहता था आनंद पर्वत, अभी भी होता है बोले कि ठीक है मत छोड़ना सोमवार को छुट्टी है हमारे यहाँ आकर देख लेना। कल लेबर डे छुट्टी होती है। मई को आपके भी यहाँ भी होती होगी। बोले - हमारे यहाँ नहीं होगी। जबरदस्ती ले गये हमको। गये तो वहाँ पर shaper का काम दिया। जानकारी नहीं थी तो भी लगातार ~~बस~~ लगा गये वहाँ पर पुराने लड़के थे अब नये को देखकर थोड़ा हावी हो गये अब ज्यादा जानकारी तो थी नहीं इसलिए शुरु मैं घबराहट होती है तो भी लगा रहा दिन भर। वो बोले की काम करो ये सुविधा है वो सुविधा है। ये जो थे वे production में थे। उनका press line था जो आगे थे बुलवाने हमलोग जो dye बनाकर ब देते थे वो अपने काम मे लाते थे तो press चलता था। अब दिन भर काम किया तो बोले दो-तीन दिन कर लो पैसे तो मिल ही जाएगा। मै बोला - नौकरी चली जाएगी। वहाँ पर लोग गुस्सा होंगे। फिर भी 2-3 दिन काम किया। वहाँ के जो मेन मालिक थे वे दो-पार्टनर थे विजय और दीपक। अभी भी है तो उराने से

नहीं थे एक दूसरे साहब । बोले कि जब वे आ जाऐंगे तो बात होगी पैसे की। हमने कहा दूसरे से बात कर लेते हैं इसी तरह 5-6 दिन हो गया। हमने कहा कि इस तरह तो हमारी नौकरी छूट जाएगी इनका मन तो था कि हम यहीं नौकरी करें । बोले- कम या ज्यादा दिलवा देंगे । दूसरे वाले जो मालिक थे उनको काम की ज्यादा जानकारी नहीं थी । मतलब वो लेता जोखा करते थे ज्यादा पता नहीं था कि कौन आदमी क्या काम करता था , किसको कितना पैसा देना चाहिए इतना मालूम नहीं था उनको । मैं उनसे मिला था । काफी जिद करने लगा कि भाई कितने दिन तक इस तरह काम करेंगे । तो बोले क्या काम करोगे । Shaper का काम कर लेना 1800 रु. देंगे हमने कहा कि इतना पैसा लेकर क्या करेंगे अभी तो 2600 रु. मिल रहा है। बोले- इतना तो हम नहीं दे सकते हैं फिर बोले कि क्यों छोड़ कर आए हमने कहा कि हमको ये बुलाए कि यहाँ जगह खाली है। बोले - कल आना दूसरे वाले आऐंगे। कल जब आया तो ये भी बैठे थे दूसरे वाले ने कहा कि क्या बात है ? पहले वाले ने कहा कि बता तो दिया है 1800 रु. मिलेंगे । हमने कहा कि 2600 रु. वहाँ मिलते हैं इतने में नहीं होगा । बोले कि वहाँ पर काम छूट गया है क्या । हम बोले कि

आए नहीं है बुलाए गये हैं। ये लोग बुलाए हैं हमारे department का एक कारीगर और ये जी थे बोले कि हमने ही बुलाया है एक लड़के की जरूरत थी। तो बोले कि ठीक है 2000 रु. दे देंगे। इसी बीच हमसे ही निकल गया कि हमें लेथ मशीन की भी जानकारी है तो हम shaper पर काम कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि 2200 रु. दे देंगे। मैंने कहा कि तब हम जा रहे हैं लेकिन ये जी ही पड़ गये बोले की कर लो। ड्योढ़ा देता है चौगुना का देता है। ओवरटाइम ज्यादा लगता है कर लो। 400 रु. कम दे रहे हैं, हमने कहा तो बोले अभी कर लो बढ़ जाएगा। हम बोले कि भाई चार पाँच दिन जो काम किया है उसका पैसा दे दो बोले कि अब ग्यारह बजे से क्या जा रहे हो पूरा दिन काम कर लो। पूरे दिन करने लगे एक देर में वे बात कर लिए बोले कि 100 रु. बढ़ा दिया। 2300 रु. मिलेंगे। वे फिर समझाने लगे बाकी लड़के भी बोलने लगे कि कर लो। मैंने भी सोचा, वहाँ कठिन काम था, छोड़ना तो चाहता ही था फिर तो बोला ठीक है फिर वहीं पर सोचकर लग गये। पर उस जगह पर बरसात में पानी लग जाता था।

जगह की तलाश। मैं घूमी थे तो फिर वहीं आकर देवनगर में जगह लिया तो फिर काफी प्रोग्रेस किया। 35-36 आदमी भी लगाकर काम बढ़ा लिया और मशीनें बढ़ाई। यहाँ पर जो पुराने लोग थे उनका arrear वगैरह साफ करके फिर PVT. ltd. factory Hindustan के नाम से खोला। फिर पीछे दोनों भाइयों के साथ काम किया। फिर जो एक छोटा भाई है उसको गाँव में पढ़ाते रहा। वहाँ देवरीया में इंटर कर रहा है। वो सुविधा तो नहीं दे पाते मगर पढ़ रहा है। पढ़ने में ठीक है तो BA करके सोचा MA करा देंगे। BA मे percentage कम था MA DU में admission कराना था। तो हुआ नहीं Russian में करा दिया सोचा कि DU में admission हो जाए तो दो साल job करेंगे तलाश भी करेंगे। तो ये लड़का जो अभी आया था विजय इसी से संपर्क करा दिया और South Campus में admission करा दिया। अभी इसी में घूमता रहा अभी गाँव गया है वो भी तलाशी में है job के। यही मेरी जीवनी है। इस समय मैं अभी Devnagar में कर रहा हूँ काम और घर की भी हालत वैसे ही है। आज ये है कि दिल्ली के जो उद्योग हैं वो काफी खस्ताहालत चल रहा है अगर काम छूट जाए तो मिलना

मुश्किल है। हमारे यहाँ भी इस साल अभी तक Scaling नहीं हुई है। कोई ठीक नहीं है बहुत लोगों का हिसाब हो जाए। अब आगे देखिए रहते हैं कि जाते हैं। अब यह है कि छोटे उद्योग रहेंगे ही नहीं तो आदमी काम कहाँ करेंगे। अभी पैसे भी आदमी के पास इतने नहीं है कि कोई business करे। अभी मान लीजिए कि Pvt. Ltd. में तीन-चार साल का PF होगा तो उससे क्या होगा। कुछ नहीं मिलेगा उसमें वो तो इधर उधर ही खर्च हो जाएगा, business भी नहीं कर पाएगा अभी नौकरी तो अच्छी मिलेगी नहीं। ~~अगर~~ अब ये है कि अगर भाई की अच्छी setting हो जाए उसको चांस दे रहे हैं कुछ मेल लगे ~~xx~~ अगर तुम कोशिश करो देख लो शायद बात बन जाए। पैसे के मामले में फिर अपना दिक्कत तो आएगा ही। ~~x~~ मैंने कहा कि try करो ~~सरकार~~ job के लिए सरकारी, army वगैरह या किसी में। जो form निकलता है तो फॉर्म भरवाते रहते हैं। एक अभी 27 मई को GPO की परीक्षा देकर गया है।

— आपने इतने मालिकों के साथ काम किया तो आप कुछ बताएंगे कि ~~मालिक~~ मालिक और मजदूर

के बीच किस तरह का relationship रहता है या फिर मालिक लोग मजदूरों का शोषण करते हैं इसके बारे में कुछ बताएंगे ?

ऐसा है कि मतलब मेरा तो relation हर मालिक के साथ अच्छा ही रहा मगर दिल्ली में शोषण तो करते ही हैं। मालिक लोग मजदूरों को उचित पैसा नहीं देते। तरह-तरह की बातें करते हैं यानि दिक्कत करते हैं जाएं ये हैं तो वे हैं। मतलब वो अपना हक नहीं माँग नहीं सकता। कोई भी Union तो सक्रिय है नहीं, Union वगैरह उतना कामयाब नहीं है। मतलब हालत से समझौता करके आदमी सर्विस कर रहा है कोई बहुत खुश नहीं है आदमी। अगर तनख्वाह अच्छी है तो कई बार तकलीफों का सामना करना पड़ता है। छुट्टी नहीं मिलेगी, या ना कोई सुविधा है वो नहीं मिलेगा या फिर कई बार तो ऐसा है कि घर में तबीयत वगैरह या किसी तरह की कोई परेशानी हो तो आदमी मिलने नहीं जा पाता है ऐसे समय में छुट्टी नहीं मिलती तो मालिक तो मजदूरों का शोषण ही करते हैं। बहुत कम ही मालिक हैं जो मजदूरों के हक की बात करते हैं और उचित पैसे देता है। वैसे जहाँ कहीं भी जाऊं मेरा relation अच्छा ही रहा है। ईमानदारी से काम

काम किया है। यही है कि मैं कहूँगा कि 75% लोग हिसाब से मालिक लोग मजदूरों का शोषण ही करते हैं। उचित पैसा नहीं मिलता, उचित सुविधा नहीं मिलती, सरकार भी मजदूरों की नहीं सुनती

— अच्छा यहाँ जो factory में काम होता है तो यहाँ मजदूरों की सुरक्षा का कोई उपाय है या नहीं ?

कोई उपाय नहीं है सुरक्षा का, कट जाता है, accident हो जाता है। हाँ ये है कि जहाँ लागू है तो जहाँ accident हो जाता है तो एक SI में फॉर्म वगैरह भरे जाते हैं उससे उसको फायदा होता है। उसमें भी जहाँ SI लागू होता है तो फायदा होता है। सही मतलब एक सुरक्षा है। यह तो फिलहाल हमारे यहाँ हैं दवा वगैरह भी करते हैं अपना माँ-बाप का तो अपना सुरक्षा है। अगर accident हो जाए और SI है तो benefit मिल जाए।

— अच्छा तो बताइये कि पहले जब आपने काम करना शुरु किया था और आज बीस साल होने जा रहे हैं तो पहले से और अब की स्थिति में कितना सुधार हुआ है ? आज आपके पास कितनी जमीन जायदाद है और क्या तरक्की किया है ?

खैर जमीन तो ज्यादा नहीं कर सका। घर बनाया है पक्का किया है। चार लोगों की शादी कराई है, मेरे दो बच्चे हैं दो साल की लड़की है बड़ी और एक छोटा। लड़का है सवा साल का हो गया है अपने परिवार को काफी अच्छे स्थिति में ला रखा हूँ। जैसे भाई हैं उनको पढ़ा रहा हूँ हमारे तरक्की का ही देन है। परिवार को अच्छे से चला रहा हूँ और पहले से अच्छा है। चूँकि जमीन इतनी महँगी हो गई है कि एक दो लाख के नीचे बात होती ही नहीं है। इसमें इतनी महँगाई है। खाना-पीना है, कपड़े वगैरह हैं तो मान लीजिए 5000-5500 रु॰ सैलरी है वो भी अभी हुई है पहले नहीं थी तो उसमें कट कर मिलता है। PF कटता है, SI कटता है, छुट्टियाँ वगैरह है तो कट कर मिलता है उसी के हिसाब से चलना पड़ता है। तो ये है कि घर वगैरह काफी अभी पीछे ही बनवाकर आ रहा हूँ चार पाँच कमरे तैयार कर रखे हैं। धीरे-धीरे दो-तीन करके बनवाया हूँ मकान तो लगभग तैयार है मगर जमीन अभी नहीं कर पाया हूँ। जमीन जो पहले दादा लोगों की है वहीं भर है। हमारा लोगों को ही मेनटेन करते आ रहा हूँ इसलिए कुछ आगे नहीं कर पा रहा हूँ। अब अगर नौकरी चलती रही सही सलामत तो कुछ कर लेंगे। अब एक छोटा है उसकी शादी कर देंगे २२-२३

साल का हो गया है तो उसकी शादी कर देंगे या उसकी settle हो जाये कहीं इसके लिए भी पैसे लगेंगे तो बंदोबस्त करना पड़ेगा। इसलिए जमीन वगैरह का तो अभी — हाँ उनकी सर्विस हो जाये तो ये शादी वगैरह कर लेंगे तो देखा जायेगा। बच्चे वगैरह हैं उनको पढ़ना लिखना है ऐसे काफी सुधार कर लिया है।

— राधेश्याम जी अभी तक तो हमने काम वगैरह की बातें की अब कुछ अपने शौक के बारे में बताइये। पहले के अब के।

पहले तो ऐसा था कि शौक फिल्म देखने का था ही और कुछ बुरा नहीं था घूमने फिरने का शौक था तो पूरा दिल्ली देखा घूमकर ऐतिहासिक स्थान देखा जैसे यार दोस्त आये, गाँव से कोई आया तो उन सबको ले जाकर घुमाया फिल्म का शौकीन था फिल्म देखते था इसके अलावा और कोई शौक नहीं था। हाँ उससे ज्यादा अब शौक मेरा क्रिकेट में बहुत है क्रिकेट बहुत देखता हूँ। खाली रहूँगा तो क्रिकेट और ड्यूटी करके आता हूँ तो कोशिश करता हूँ Part time मिल जाये लेकिन नहीं मिलता इसलिए खाली समय में बैठे रहते हैं, घर पर ही या दोस्त के घर गये या मार्केट घूमने चले गये। अब फिल्म का शौक मंहगाई के हिसाब से और परिवार बड़ा हो रहा इस हिसाब से अब कम कर दिये हैं। अब ये है कि क्रिकेट का शौक अगर रात को भी जागकर देखना पड़े तो देखते हैं।

— आपने जैसे तरक्की के बारे में बताया तो आगे का क्या Plan है क्या सोच रखा है बच्चे हैं, भाई हैं, उनकी पढ़ाई लिखाई है तो उनके बारे में कुछ बताइये।

वैसे शौक तो बहुत कुछ है ही सोचता हूँ बच्चों को अच्छे से अच्छा डॉक्टर बनाये, इंजिनियर बनाये इस तरह का। जैसे हम अपनी लड़की को मेरे मन में इच्छा यह रहती है कि हम उसको डॉक्टर बना दे। लड़का को भी कोई अच्छा कोर्स करा के नौकरी दे या तो फिर नौकरी छूट तो कोई Bussiness हो जाये या फिर बाहर के देशों का मौका मिलता है तो वहाँ चला जाऊँ। तो घर का मतलब मेरा तो ये

है कि हमसब इकट्ठा रहे तो और अच्छा रहे। अगर हमें कष्ट होता है तो सह लेंगे। लेकिन भाई चार हैं उनके आगे क्या मन में होता है ये तो समय ही बतायेगा पर हम चाहते हैं कि परिवार Combind ही रहे साथ चले हम अच्छे से तरक्की करे। और शौक तो बहुत कुछ है गाड़ी हो बंगला हो हर तरह का हो लेकि ईमानदारी से हो भगवान से भी प्रार्थना है कुछ गलत ना करे। ये है कि रोजी रोटी चलती रहे मेहनत से। हाँ पैसे का तो लालच होता ही है ज्यादा से ज्यादा हो जैसे शो वगैरह चलता है लखपति का करोड़पति का हमें भी मौका मिले किसी तरह का कि पैसे ज्यादा-ज्यादा कमा लें। मतलब कि ये है अगर बाहर जाने का भी मौका मिले तो जायेंगे।

— अच्छा तो अपने सपने के बारे में बताइये किस तरह के सपने देखते हैं।

सपने..... सपने तो यहीं है कि परिवार अच्छा चले, ये-ये सामान हो।

— मैं इनकी बात नहीं कर रहा था मैं सोते वक्त देखने वाले सपने की बात कर रहा था।

सोते वक्त में तो क्या आदमी अगर ज्यादा संघर्ष कर रहा हो तो उस समय सपने भी ज्यादा ठीक नहीं आते कुछ सपनों में भी संघर्ष करते दिखाई देता। ये लड़ रहा हूँ, तो इससे संघर्ष कर रहा हूँ सपनों में भी संघर्ष ही दिखाई देता है। सपने भी अच्छे नहीं दिखाई देते। या फिर कभी-कभी माँ बाप भाई-बहन क्या कर रहे हैं उनको देख लेता हूँ। यही सब तरह के सपने आते हैं। और क्या हम ऊँचे महल में घूम रहे हैं या कार पर चल रहे हैं इसतरह के सपने नहीं आते।

— अच्छा तो एक बात ~~बाइये~~ बताइये जबआपने 81 में 100 Rs से काम शुरू किया था और अभी 5500 रु मिल रहे हैं तो उस समय आप ज्यादा ठीक थे या अभी। मँहगाई के हिसाब से..

वैसे तो महँगाई उस समय के हिसाब से ज्यादा है... ये तो है ही मैं कुछ काम कर लेता हूँ पर जिस तरह से पैसे बढ़े उस हिसाब से महँगाई बहुत ही ज्यादा है

में तो ये है कि मैं कुछ काम कर लेता हूँ पर जिस तरह से पैसे बढ़े हैं उस हिसाब से महँगाई बहुत ही ज्यादा है वो तो आदमी ऐसी स्थिति में ढाल रखा है कि करता ही है आगे तो इरादा वो है कि जो काम है जैसे बच्चों का होना है, मकान बनाना है या कोई छोटी मोटी गाड़ी लेनी है जिससे थोड़ा गुजारा हो सके आने जाने का साधन हो इस तरह का सोचते रहते हैं मतलब और ये है कि पहले से परिवर्तन - - -
मतलब ये है कि पहले का जो माहौल था वो ठीक था इस समय का माहौल अब ठीक नहीं है, दिल्ली का अब ये है परिवर्तन। पैसे के हिसाब से अब अगर यहाँ कोई आदमी काम कर रहा है कहीं का भी हो किसी का भी मजदूर कर रहा हो अगर उसका अचानक काम छूट जाए तो वो एकदम से फुटपाथ पर आ जाता है क्योंकि उसके मन के हिसाब से काम नहीं मिलता या मिलेगा। तो पैसे नहीं मिलें मे - -

— और यहाँ तक पहुँचने में आपके माँ-बाप यानि माता-पिता का क्या योगदान रहा ?

मेरे माँ बाप का बड़ा आशीर्वाद रहा मेरे माँ बाप तो अशिक्षित ही है (थोड़ी उदासी से) पर ये है कि बहुत कठिनाइयों से हमें पाला है आधी रोटी खाकर पाला है हमें वे दिन मैं भूलता नहीं है। इसलिए हम अभी भी ज्यादा प्रोग्रेस नहीं कर पाए है क्योंकि गरीबी से उठे है तो आदमी बीमार रहता है अब माँ को कुछ परेशानी है पिताजी की परेशानी है। इसी में हम उलझे रहते हैं इसलिए हम उभर नहीं पाते हैं।

— गाँव में ही रहते हैं ?

हाँ, गाँव में ही रहते हैं। गाँव में से

ताल्लुक है हमारा। गाँव ही है जो सहारा है हमारा। क्योंकि ये जो जगह है यहाँ से सरकार कभी भी हमें हटा सकती हैं गुजारे के लिए काम चल रहा है बस ~

– राधेश्याम जी अब आप कुछ अपने बचपन के बारे में बताइये कुछ यादें - - - -

ऐसा है कि मेरे बचपन में होश जबसे संभाला हमारे पिताजी तो नौकरी छोड़ चुके थे तो उन्होंने क्या किया कि उन्होंने एक छोटी साइकिल की दुकान खोली थी गाँव में ही छोटे चौराहे पर जो दिन भर चलता था तो शाम की रोजी रोटी हो जाती थी। तो ये है कि जब से होश संभाला तो पढ़ने में घर से काफी मन लगाकर पढ़ते थे। मतलब जो सुविधा उपलब्ध है थी उसी के हिसाब से ही यानि गाँव में किताब वगैरह किसी से माँग के। हमारे गुरु जी हैं, टीचर हैं एस साधन इंटर कालेज में कृष्ण कुमार साहाय जी उनके घर यही है primary school सरकारी, बचपन में गाँव में तो वहीं पढ़ते थे। उनके घर से भी काफी सहयोग। मिलता था तो पिताजी क्या करते थे कि दुकान करते थे। तो होश जबसे संभाला उसी समय से, हमारे पिताजी भी पहले एक बार दिल्ली में आ चुके थे तो ये Modern Machine के लाइन में काम किये थे तो उनका accident हो गया था उसी दौर में तो dye फट गई उसका plastic का जो माल होता है वो गर्म होता है heat वो उनके ऊपर गिर गया। तो जो moulding machine चलाते हैं वो कपड़े डालकर चलाते हैं, तो उनका पूरा पैर जल गया तो उन्होंने यहाँ से चले आये। और किसी गाँव के लोगों ने मतलब राजस्थान वगैरह घुमे। घुम कर

आने के बाद मतलब दुकान खोला। और करने लगे।
मतलब नाम मात्र की थी, उससे गुजारा भी नहीं हो पाता था।
मैं मेरा शौक ही नहीं था, उनकी स्थिति को देखकर उम्र के हिसाब से जो करता था। बचपन से ही किसी के पास आना जाना भी नहीं। बच्चों के बीच भी खेलना नहीं। कभी खेलने की इच्छा की तो पहले लोग गिल्ली खेलते थे, फुटबाल खेलते थे यही सब थे हमलोग के जमाने में। इच्छा तो करती थी वो पूर्ति नहीं होती थी। सो हमारे पिताजी थोड़ा दूसरे तरफ के थे जैसे किसी के यहाँ चला जाता था तो वो ढूंढने लगते थे तो मतलब नहीं जाते थे। वैसे भी मतलब किसी के यहाँ हमारा आना जाना नहीं रहता था। मतलब पिताजी की दुकान में लगे रहते जैसे ही छुट्टी होती थी। सुबह हम स्कूल गये तो इससे पहले पिताजी खेतीबाड़ी का काम कर लिये घर पर तो सुबह उठके भोर में चार बजे जग जाता हूं उस समय भी तो जो हमारे पास बुक वगैरह किताब थी उसका मैं अध्ययन करता था लिखता था और हमारे माता पिता जब सोये रहते थे तो उसी समय जग करके गाय हो बच्चा हो उसको बाँध करके चारा डाला देता था। वो खाने लगते थे और बचपन से उठ के माता पिता का पैर मतलब प्रणाम करता हूँ अभी भी रहता हूँ घर पर तो करता हूँ तो उसके बाद पढ़ने बैठ जाता हूँ। तब तक मातापिता उठ जाते हैं। फिर उसके बाद गाय का गोबर, हटाना, मेरा मतलब शौक था कि मैं अपने हाथ से ही करता था। पिताजी कहीं काम करने लगते थे तो जाके मैं दुकान लगा देता था। सुबह फिर मैं 9 बजे तक सुबह primary करने के बाद थोड़ा और होश हुआ तो उनके साथ दुकान ~~लगा देता था~~। चलाने लगा। और इंटर

जो है मतलब वो यही कोई 6 km से कम नहीं होगा ज्यादा ही होगा। तो हमलोग पैदल - रास्ता गाँव का कोई अच्छा नहीं था। कीचड़ वगैरह ऐसे ही था। गाँव में कोई ज्यादा विकास नहीं था। तो पैदल जाते थे। गाँव के एक दो लड़के और थे तो पिताजी हमारे आ जाते थे 9 के आस पास फिर हम घर जाते थे दुकान से दौड़ के फिर नहाते थे, खाते थे फटाफट तैयार होते कभी साइकिल थी तो चले गये नहीं तो पैदल ही जाते थे। तो ये होता था दुकान के चक्कर में पहली क्लास थी तो छूट जाती थी कभी आधा भी। तो काफी मेहनत की शुरुआत में। तो lower क्लास पढ़ता रहा ऐसे ही मेहनत करके टीचर लोग जान पहचान के थे। Principal साहब से हमारे father का पहले का जान पहचान था वो सर्विस के period में जब वो रास्ते से आते थे तब की थोड़ी जान पहचान थी तो हमने लेकिन जब हम पढ़ने लगे तो उनसे जान पहचान थी। तो हमारी स्थिति को देखते हुए हमारी फुल फीस माफ कर दी थी। उसके बाद लेकिन 2½ - 3 रु. जो फीस कुछ लगती थी और पढ़ने के लिए मतलब जो कुछ भी था। ठीक था, कोई अच्छा तो था नहीं, मगर ठीक था। कोई पढ़ाने वाला था नहीं, कोई ट्युशन वगैरह नहीं था। जो अपने से अध्ययन था कर लिया। उसी में मन लगाकर के साथ - साथ कर लिया तो उसी के आधार पर जो छात्रवृत्ति मिलती है तो हर तरह के लोग तो होते हैं, वो जो छात्रवृत्ति मिलती है वो तो एकट्ठे मिलती थी तीन-चार महीने के जो बाबू लोग थे वे लगाते थे खाने, वो भी थोड़ा। जबकि टीचर लोग काफी मदद करते थे। वैसे एक क्लास टीचर थे हमारे वो थोड़ा हमें तंग करते थे।

वो 2½ -3 तीन रु. भी कभी समय से नहीं दे पाते थे। तो कई बार हमारा नाम काट देते थे। तो काफी लोग बोलते थे कि ऐसा है लड़का होनहार है तो इसको ऐसे ही --- पिताजी झगड़ालू किस्म के हैं तो वो झगड़ा करने लगते थे लेकिन मना करते थे, तो हमारे गाँव के एक हैं इस समय प्रोफेसर हो गये हैं Hindi के lecturer, तो ओवर करने के बाद जब हम 9वीं दसवीं कक्षा में गये तो उनका class था। हिन्दी और sanskrit, Math और English पांच विषय था और था सामान्य विज्ञान।

तब सभी टीचर लोग बहुत मानते थे। हमारे टीचर वो English बहुत बढ़िया पढ़ाते थे उनका काफी योगदान है। मार्गदर्शन किये हैं और यहाँ पर जो बड़ा भइया था Engineer थे इन दोनों का काफी अहसान है। मार्गदर्शन करने का मतलब उनके चलते मैं इस स्थिति में आज पहुँचा हूँ। तो क्या करते थे कि मतलब English पढ़ाते थे तो उनका subject मैं पूरी तरह से मेहनत करके तैयार करता था ताकि कोई परेशानी न हो। तो उन्होंने वजीफा वगैरह दिला देते थे लेकिन Board की परीक्षा में फीस माफ होने के बाद भी वो लगता है ना फीस वगैरह तो वो नहीं दे पा रहा था। तब प्रवेश पत्र मिलना मुश्किल हो गया था। तो यही हमारे गाँव के जो हैं कमल कुमार सहाय जी तो इन्होंने अपने पास से जमा किये और तब जो क्लास टीचर थे उनके पास। इस प्रकार बोर्ड का exam दे पाये। दूसरे गाँव में जाना पड़ता था। बोर्ड दूसरे जगह जाना पड़ता था न उस समय? तब मेरा यही का[illegible]

था कि उस समय जब छुट्टी होता था तो सबसे पहले घर आना होता था। जैसे कि कोई लड़का आगे निकल गया और हमारे पिताजी दुकान पर बैठे हैं तो जब वो देख लिए की अभी तक नहीं आया है हमारा लड़का। तो पूछ देते थे कि अभी तक कहाँ थे। तो एक और साथी था वो भी पढ़ता था हमारे साथ तो वो और हम। उनके घर की स्थिति ठीक थी हमसे, जमींदार थे। तो उनका भी कोई शौक नहीं था। वो और हम मतलब किसी से ग्रुप से कोई मतलब बिल्कुल अलग ... खेलों वगैरह में भी भाग नहीं लेते थे। शौक था मगर घर की स्थिति -- इसके लिए तो टाइम चाहिए और हम टाइम दे नहीं पाते थे लेकिन शौक रहता था कि खिलाड़ी अच्छा बनें, फुटबॉल का, वॉलीबाल का कभी कॉलेज में चले गये तो आगे पीछे दौड़ लिया। नहीं तो वो भी नहीं मिला। खेलते थे तो अच्छा लगता था लेकिन घर की स्थिति से नहीं। एक बार टूर्नामेंट फुटबॉल का चल रहा था तो स्टेट के जितने भी मतलब हर जगह का। राज्य स्तर बोलते हैं ना तो उस level पर था देखने लगे। जैसे छुट्टी हो जाती है तो शाम हो जाता था। एक हमारी पुरानी साइकिल थी क्या किया कि दो-तीन लड़के थे गाँव के तो क्या है कि ये जो रेत होता है, उस तरह का उस पर आदमी पैदल चलता है। साइकिल वगैरह नहीं चल पाता था। ऊँचा सा था काफी पहाड़ी था। उस पर जंगलों वगैरह भी थी। तो देख कर वापस आ रहे थे हमलोग शाम को। एक घटना हुआ था। तो क्या हुआ कि हमलोग मजाक-मजाक में साइकिल इधर-उधर घुमा रहे थे, लड़के तो हम थे ही। ऊँचे की तरफ से ऊँचा, गहरा

गड्ढा था और हमारी ऊंगली में चोट लगी थी घर पर चारा काटने में लग गया था। ऊंगली पर पट्टी बाँध रखी थी तो ऐसे (एक हाथ से) पकड़ कर चला रहा था। उसमें हैंडल को नचा दिया और मैं सीधे गड्ढे के अंदर जाकर गिर गया और हमारी साइकिल का फ्रेम टूट गया। अब डर हो गया कि घर पर पिताजी बोलेंगे मारेंगे फिर कोई जल्दी करना नहीं चाहता था। वो तो अलग गुस्सा थे कि अभी तक आया नहीं शाम हो गया था, अंधेरा हो गया था। करीब 5 बजे से देखना शुरू किया था 6 बज गया था। लगभग घर तो 5-6 किमी जाना ही था उसमें आधा-पौन घंटा तो लगना ही था तो घर गया तो पिताजी थे हमारे। तो मतलब पूरा डर से मेरा हवा ही गुम हो गया था। साइकिल लादे पीछे दोनों तीनों लड़के गये वो चलने लायक ही नहीं थी, फ्रेम टूट गया था बीच से अब ये हुआ कि मार तो क्या कहें? तो बनाई कहानी कि एक शराबी ने टक्कर मार दिया गिर गये नीचे। तो जैसे ही गये नीचे उनको देखते ही बोलने लगे तो फुटबॉल का कौन बोले, बोले कि शराबी ने मार दिया और हम गिर गये। तो वो बिगड़ गये। फुटबॉल का शौर था, टूर्नामेंट चल रहा था सबको पता था कि वो देख रहे हैं तब काफी डाँट बतलाए तो सुनकर रह गये कुछ बोले नहीं किसी तरह से बला टली वो बस। तो उसके बाद से वही -- कोई और गेम खेलने को मिलता नहीं था क्रिकेट का शौक दिल्ली में आकर चढ़ा है पहले तो पता ही नहीं था इसके बारे में। पर यहाँ इतनी जानकारी हो गई कि होने लगता है तो फिर दिलता नहीं

जब तक परिणाम न मिल जाए । यही शौक था। बच्चे
से ये था कि खेती बाड़ी में भी जाना हुआ तो हमलोग का -
ट्रैक्टर वगैरह तो अब आया है ना तो अब तो बल्कि
हमलोग भी करा लेते हैं । पिताजी को तंगी वगैरह
रहती है पैसों की हमलोग बोलते हैं कि करा लेंगे इसीसे
पहले ये था कि कुँए से पानी खींचते थे खेतों में चलाते
थे । बैल वगैरह की भी दिक्कत थी । बड़े किसान तो
थे नहीं तो हमलोग कुदाल फावड़ा से ही खेत की कुड़ाई
वगैरह करते थे । उनके साथ मतलब यही हमारा काम था
कि लगे रहते थे पिताजी के साथ। बाकी समय में जब टाइम
मिला तो पढ़े कहीं मतलब में मेला बाजार वगैरह नहीं
गया जब तक मैट्रिक किया, तब तक भ नहीं गया हूँ
मतलब जो हमारा मेन city है देवरिया उसमें तक नहीं
घुमा था । सीधे दिल्ली आया था । वो भी कोई लेके आया
था । हमारे मामाजी लेके आये थे उसके बाद कोई रास्ता
महसूस नहीं होता था । कौन सा पूरब है, कौन सा पश्चिम
है । जो हमारी जो उम्र 16 साल की थी उसमें कोई ज्यादा
जानकारी नहीं थी, गाँव में कहीं आना जाना नहीं था । बाज
तक भी नहीं जाते थे । झूठ नहीं बोलेंगे । गये तो दुकान
पर लग गये । जानकारी हो गई थी हमको भी । पिताजी
नहीं रहते थे तो हम चलाते रहते थे तो उसमें भी हम
हमारे पिताजी को ये थी कि जो कमाते थे वे खर्चा कर
देते थे शाम तक । लेकिन जो हम कमाते थे उसमें से
पैसे को बचा लेते थे । बचा करके दुकान के लिए कि जितना
कमाएंगे उतना अपने लिए नहीं रखते थे उसमें से ।
हमारा ये भी शौक नहीं था कि जैसे कुछ खाने को
आया तो लेकिन, उनके सामने ही लेते थे । नहीं

तो इच्छा को दबाके रखते थे। फिर क्या करते थे कि एक-दो-दो रुपये जोड़ करके। गाँव में कोई इतनी आमदानी भी नहीं थी। पैसों में मजदूरी कम ही मिलती थी। जैसे साइकिल पंक्चर वगैरह हो गये तो 25 पैसे और बड़ी दुकान तो थी नहीं कि पैसे उनके पार्ट्स वगैरह रखकर बेचें। किसी का मिल गया काम कि भाई इसे बना दो तो उससे कुछ लिये तो सामान खरीदकर लाकर लगा दिये तो उससे 10-5 रु॰ मजदूरी मिल जाता है। तो उससे क्या करता था हफ्ते भर के बाद जैसे सस्ता था। आज के हिसाब से 10-5 का कुछ तो मिलेगा नहीं लेकिन उस समय मिल जाता था कई सामान। 10-15 रु॰ इकट्ठा करता था तो वही पिताजी को दे देता था। तो जाते थे वो मैनसिटी से कभी टायर हुआ, ट्यूब हुआ, सीट या फ्लैक वगैरह जो भी साइकिल में लगाते हैं शौक से वो लेकर आते थे। अच्छा फिर मतलब हमारे गाँव से करीब 7-8 km की दूर नदी पार करके जाना पड़ता था नाव से अब पुल बन गया है तो परीक्षा देने जाते थे तो रुकवाये वहीं किसी जान पहचान के यहाँ तो भाई हमलोग किराया में रह नहीं सकते थे। गरीब लड़के थे तो हमलोग अपने घर से खाने पीने का कुछ ले जाते थे, वहाँ बनवाते थे, खाते थे। एक-डेढ़ महीना चलता था परीक्षा। एक-दो दिन का गैप होता था घर भाग आते थे हमारे पिताजी तो जैसे कभी पैसे-- तो उस समय नकल की प्रथा शुरु हो गई थी मगर उस समय भी पैसे वगैरह जिनके पास थे वही करा पाते थे या फिर जो अमीर घर के हैं वो करा पाते थे।

और जो हमारे तरह के थे तो दसों लड़के थे अगर वो कोई करा दियो तो नहीं तो नहीं होता था। जो जानकारी है वही लिखना पड़ता था तो बहुत मुश्किल से ही मैं पास हुआ था मैट्रिक मतलब मेरे पासिंग में था, कोई दो नंबर कम ही थे था। लेकिन 62% के आस पास संस्कृत और अंग्रेजी में था मेरा नंबर। मेरे घरवाले यानि माँ पिताजी ने सब दो-चार रुपये और क्या किसी के पास पैसा होता था। जैसे आज 10-5 रु. का लोग पानी पी जाते हैं। उस तरह से 2 रु. का ज्यादा से ज्यादा 5 रु. या 1-4 रु. जब आते थे दो-तीन दिन पर तो देते थे। तो मैंने क्या किया था कि इन सबको इकट्ठा करके, उसमें से भी नहीं खर्च किया। वहाँ पर भी भगवान का नाम लेकर बैठ जाते थे कि भाई जो आएगा वही लिखेंगे। कोई मिल जाएगा मददगार तो बोल देंगे, लेकिन अपने पैसे कोई भी जाया नहीं करना है ना ही किसी को बोलना है कि तुम हमारी मदद करो। तो क्या है कि वहाँ से जब परीक्षा खत्म हुआ तो ले गये वो पैसे इकट्ठे थे हमने अपनी माँ को दे दिया। मतलब मैं अपनी माँ को बहुत मानता था, अपनी माँ को देता था पैसे।

— तो क्या जब आपने दसवीं तक पढ़ाई की तो कहानी वगैरह या Literature में रहा होगा आपका शौक पढ़ने का ?

नहीं ये है तो है कि जानकारी के ऊपर होता है जब जानकारी हो तो आदमी उसमें Interest ले लेकिन हमारी जब जानकारी थी हमारे में कोर्स है ये पढ़ना है। हमको इससे अधिक जानकारी हमको थी नहीं। और इतनी जानकारी हमको ये थी कि हमारी घर की स्थिति ऐसी

है तो पिताजी के साथ दुकान चलाता था। ये सामान लाना है यही बस जानकारी थी हमारी। बाकी जैसे कोई paper वगैरह पढ़ने को नहीं मिलता था। कोई सुविधा नहीं थी। जाना पड़ता था 10-15 km पैदल कोई साधन नहीं था आने-जाने को। अब तो घर-घर का रोड नहर हो गया है काफी विकास है। इसलिए अब जानकारी है तो शायद ही निकल गया। अब ये है कि बच्चों को देखना है, उनके लिए ये करना है। माँ बाप को देखना है, बीवी को देखना है, यही है बस सामने यही है बस और कुछ नहीं।

– अंतिम सवाल, अगर कभी आपको मौका मिला तो आप गाँव में जाना पसंद करेंगे या यहाँ रहना पसंद करेंगे?

अगर मौका मिला तो... सर्विस नहीं रही, सर्विस के पीछे मैं यहाँ हूँ, इच्छा नहीं रह गई है दिल्ली में रहने की गाँव में ही रहेंगे या कोई बिजनेस करके सिटी में। मतलब कोशिश यही रहेगी की गाँव के पास सिटी में शहर जो है हमारा उसमें अगर भगवान की कृपा हो जाए तो कोई बिजनेस वगैरह छोटी-मोटी खोल लें। लेकिन वहाँ भी मुश्किल है कि एक-डेढ़ लाख रुपया नीचे के कोई बात ही नहीं है, आज के जमाने में जगह ही नहीं मिलेगी। लेकिन कोशिश यही रहेगी कि गाँव में ही रहें या सर्विस रहेगी तब तक तो परिवार करते रहेंगे लेकिन हमें ये नहीं लगता कि दो-चार साल से ज्यादा हम सर्विस कर पाएंगे। क्योंकि स्थिति काफी कुछ खराब हो गई है। यहाँ दिल्ली की एक तो सरकार का रवैया ही कुछ अलग है। अगर मान लीजिए कि फैक्ट्री यहाँ से हटाई जा रही हैं तो शहरों में लगेगा नहीं हमारी

मान लीजिए अगर --- इनका प्रोडक्शन ही नहीं चलता है तो seasonal काम है --- ना कामयाब हुए तो मान लीजिए तब तक काम करेंगे हिसाब ही लेंगा। काम चलेगा तो रखेंगे नहीं तो नहीं रखेंगे। वैसे तो व्यवहार में कोई यें नही हैं, व्यवहार ठीक ही ठाक है। रखते हैं हमलोग। अभी कोई लड़ाई - झगड़ा की बात नहीं है हमारे यहाँ लेकिन मान लीजिए जैसेकि उनका यें है कि इस समय उनका सेलिंग नहीं हो, कह देते हैं कि हम bonus नहीं देंगे तो हो सकता कोई वाद - विवाद भी हो सकता है। लेकिन रहेंगे तो गाँव में ही रहेंगे। नहीं तो कहीं बाहर के देश में जैसे सर्विस के चक्कर में ही जाएँगे। जबतक बच्चों के भविष्य कुछ सँवर ना जाए तब तक कुछ करना है। जिंदगी जब तक गुजार जाए --- बस अभी तो यहीं है रहना। पसंद गाँव में ही करेंगे। अच्छा लगता है, जैसे गाँव जाते हैं तो आने की इच्छा नहीं होती। यहाँ अब ऊब चुके हैं, बहुत --- बहुत ऊब चुके हैं।